IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षकों में सहयोगात्मक व्यावसायिकता का विकास

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष भटनागर

असिसटेन्ट प्रोफेसर

शोधार्थी

श्रीमती सीमा शर्मा

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं राजस्थान ।

सार

सहयोगात्मक व्यावसायिकता ने शिक्षकों के बीच जिम्मेदारी टीम वर्क और दूसरों के विचारों और दृष्टिकोणों की समझ को बढ़ावा दिया है. सहयोगात्मक समस्या समाधान और उच्च–गुणवत्ता वाले परिणामों के निर्माण को प्रोत्साहित किया है। ये गतिविधियाँ व्यावसायिक विकास के लिए प्रभावी उपकरण साबित हुई हैं। परिणामस्वरूप, छात्रों के उच्च स्तरीय सोच कौशल को कुशलतापूर्वक बढ़ाने के लिए इन गतिविधियों को और विकसित किया जा सकता है। भाग लेने वाले शिक्षकों ने अपने साथियों से गहन अवलोकन और सीखने के माध्यम से अपनी शिक्षण प्रथाओं को उन्नत करके सीओपी (कम्यूनिटी ऑफ प्रेक्टिस) और पाठ अध्ययन पर गतिविधि आधारों में शामिल होने से महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त किए हैं। उन्हें प्राप्त बहुमूल्य फीडबैक ने उन्हें अपनी शिक्षण तकनीकों को परिष्कृत करने और नवीन गतिविधियों को शामिल करने के लिए सशक्त बनाया जो छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती हैं। सीओपी प्रयास में इस सहयोग ने शिक्षण और समस्या–समाधान दोनों में टीम वर्क और सामूहिक जिम्मेदारियों को बढ़ावा दिया। शिक्षकों को इन नवीन गतिविधियों को लागू करने, प्रभावी ढंग से छात्रों का ध्यान आकर्षित करने और समस्या–समाधान प्रयासों में उनकी सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने से अत्यधिक संतुष्टि मिली। इसके अलावा, इन गतिविधियों ने साथी शिक्षकों के बीच पारस्परिक स्वीकृति, विश्वास और सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा दिया, विविध सोच क्षमताओं का पोषण किया और शिक्षण पेशेवर गुणों को बढ़ावा दिया। अंततः यह गतिशील सीखने का माहौल छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए अत्यधिक प्रभावी साबित हुआ है, जिससे शैक्षिक सेटिंग में एक रचनात्मक और विकासोन्मुख माहौल स्थापित हुआ है।

मुख्य शब्द :– सीओपी(कम्यूनिटी ऑफ प्रेक्टिस), सहयोगात्मक व्यावसायिकता।

प्रस्तावना –:

व्यक्तिगत और संगठनात्मक विकास के लिये विभिन्न शक्तियों और प्रयासों का सामंजस्थ आवश्यक है, हम संदर्भ में जेम्स कैश पैनी कथन इस तथ्य की सटीकता को उद्घृत करता हुआ प्रतीत होता है–:

विकास कभी भी मात्र संयोग से

नहीं होता, यह एक साथ काम

करने वाली शक्तियों का परिणाम होता है।

सामान्य रूप से व्यावसायिक सहयोग छात्रों और की शिक्षकों दोनों को समान रूप से लाभ पहुँचाता है। व्यावसायिक सहयोग छात्रों की उपलब्धि को बढ़ाता है, शिक्षकों की संरख्या बढ़ाता है। साथ ही नवाचार और परिवर्तन के कार्यान्वयन को बढ़ाता है। – अब प्रश्न यह नहीं है कि, शिक्षकों को सहयोग करना चाहिए या नहीं बल्कि, बड़े सवाल यह है कि शिक्षक और अन्य शिक्षक किस तरह और कितनी अच्छी तरह सहयोग करते है। सहयोगात्मक व्यावसायिकता से तात्पर्य है कि लोग कि किस तरह सहयोग करते है, यह सहयोग मजबूत, या कमजोर, प्रभावी था अप्रभावी किसीन किसी तरह से किया जा सकता है। यह एकसाक्ष्य– ंसूचित संवाद की एक संरचना के रूप में जाना जाता है।

प्रभावी सहयोगात्मक व्यावसायिकता के लिये

एकजुटता, ह्रढ़ता, आपसी विश्वास, विशिष्ट प्रोटोकॉल मैं संरचना पक्रियाऐं, की भावना का होना आवश्यक है, जो एक ऐसे माहौल की ओर के जाते है , मानों कि सभी एक ही नाव में संवार है, और सभी अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहे है ।

विशेषताएँ और सिद्धान्तः–

1 सामूहिक स्वायत्त्रा –. शिक्षकों को ऊपर से नीचे तक नौकरशाही से स्वतंत्रता है, लेकिन छात्रों की सफलता के लिये एक–दूसरे के प्रति जवाबदेही बढ़ जाती है।

2. सामूहिक प्रभावकारिता – साझा विश्वास कि, एक साथ काम करके, शिक्षक चुनौतियों की परवाह किये बिना छात्रो के परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर ला सकते है।

3. सहयोगात्मक जाँच – शिक्षक अपने तरीकों को बेहतर बनाने के लिये नियमित रूप से कठोर योजना और विश्लेषण के माध्यम से अभ्यास की समस्याओं और मुद्दों की जाँच करते हैं।

4. संयुक्त कार्य और पारस्परिक संवाद – सहयोग में सक्रिय रू‍प से एक साथ काम करना शामिल है। उदाहरण के लिये पाठों की योजना बनाना, एक–दूसरे का अवलोकन करना, छात्र के काम का विश्लेषण करना ।

5. विश्वास और समर्थन – प्रभावी सहयोग के लिये एक मूलभूत तत्व सहकर्मिको और शिक्षकों और प्रशासकों के बीच विश्वास है, जो जोखिम लेने और ईमानदार प्रतिक्रिया देने के लिये एक सुरक्षित वातावरण बनाता है।

सहयोगात्मक व्यावसायिकता के प्रमुख घटक

(1) एकजुटता – एकजुटता की भावना के साथ उच्च विश्वास की आवश्यकता होती है।

(2)सहयोगात्मक पूछताछ – शिक्षक और अन्य शिक्षक एक दूसरे के अनुभव और दृष्टिकोणों से सीखते हये, अपनी अभ्यास की समस्याओं की जाँच और समाधान करने के लिये सभी मिलकर कार्य करते है।

(3) संयुक्त गतिविधियों – सहयोग कई रूपों में हो सकता है, जिसमे संयुक्त पाठ योजना, सहकर्मी सलाह, एक–दूसरे की कक्षाओं का अवलोकन करना और संसाधनों को साझा करना शामिल है।

(4)एक पेशेवर समुदाय का निर्माण – सहयोगात्म व्यावसायिकता एक सहायक वातावरण को बढ़ावा देती है जहाँ शिक्षक अपनेपन की भावना महसूस करते हैं।

(5) छात्र परिणामों पर ध्यान – अंतिम उदेश्य अपने सामूहिक प्रयासों के माध्यम से शिक्षक कौशल और ज्ञान को बढ़ाकर छात्रों के सीखने के अनुभवों को बेहतर बनाना है।. **सहयोगात्मक रिव्यावसायिकता का विकास करना :–**

सहयोगात्म व्यावसायिकता के विकास के 5 चरण माने गये है।

1, उदभव – व्यावसायिक सहयोग व्यक्तिवाद का एक विकल्प हैं, जहाँ अनुसंधान छात्रों के सीखने और उपलब्धि पर इसके सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

2. संदेह – व्यावसायिक सहयोग के कुछ कप इतने कमजोर है कि वे कारवाई के बजाय बातचीत पर अधिक निर्भर रहते है।

3 डिजाइन – एक मॉडल के रूप में जाना जाता है

4. विरोध – शिक्षकों और स्कूलों के बीच प्रदर्शन का मूल्यांकन करने और विफलता से निपटने के तरीके के रूप में प्रतिस्पर्धा के प्रवर्तकों का दावा है कि पेशेवर सहयोग पहल का बहुत कम या कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

5. परिवर्तन – व्यावसायिक सहयोग सहयोगात्मक व्यावसायिकता के गहरे रूपों में परिवर्तित होता है।

सहयोगात्मक व्यावसायिकता के लाभ :–

1 छात्रों की उपलब्धि मे ंसुधार – सहयोगात्मक व्यावसायिकता से छात्रों के सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं।

2. शिक्षक प्रतिधारण में वृद्धि – शिक्षकों के पेशें मे ंबने रहने की संभावना तब अधिक होती है जब उनके पास एक सहायक नेटवर्क होता है।

3. उन्नत विचार – यह परिवर्तन शुरु करने और लागू करने की क्षमता में सुधार करता है , क्योकि विचार सहयोगी संस्कृति के माध्यम से फैलते है ।

4. शिक्षक विकास –शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने नए कौशल हासिल करने और चुनौतियों पर काबू पाने के अवसर प्रदान करता है, जिससे तनाव कम होता है ।

सहयोगात्मक व्यावसायिकता का प्रारूप बनाना

विद्यालयों में विद्यालय प्रणालियों का निर्माण ही, ऐसे प्रारूप को काम लेते हुये किया जाता है, जिससे सभी शिक्षको मिलकर कार्य करना पड़े। इन विद्यालय प्रणालियों के प्राकृप को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है जैसे :–

1. सामूहिक स्वायता – सामूहिक स्वायता में शिक्षकों को अधिकार दिये जाते हैं, सामूहिक स्वायता को यदि ऊपरी तौर पर देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि, शिक्षको को शीर्ष नौकरशाही प्राधिकरण से अधिक स्वतंत्रता होती है, लेकिन वास्तविक रूप में एक–दूसरे से कम स्वतंत्रता होती है।

2.सामूहिक प्रभावकारिता – सामूहिक प्रभावकारिता इस विश्वास के बारे में है कि शिक्षक मिलकर अपने छात्रों में बदलाव ला सकते है।

3 सहयोगात्मक जाँच– सहयोगात्मक जाँच में, शिक्षक नियमित रूप से समस्याओं, मुद्दो या अभ्यास के अंतरों का पता लगाते है ताकि वे जो कर रहे है उसे, बेहतर या रूपान्तरित कर सके। अपने सबसे अच्छे रूप में सहयोगात्मक जाँच शिक्षण की प्रकृति में ही अन्तर्निहित है। शिक्षक समस्याओं को हल करने से पहले उनकी जाँच करते है ।

4. सामूहिक जिम्मेदारी – सामूहिक जिम्मेदारी लोगो के आपसी दायित्व के बारे में है कि वे एक–दूसरे की मदद करें, और उन छात्रो की सेवा करें, जो एक–दूसरे के समान है। सामूहिक जिम्मेदारी हमारे छात्रो के बारे में है, न कि केवल व्यक्तिगत काम के बारे में।

5. सामूहिक पहल – सहयोगात्मक व्यावसायिकता में पहल कम होती है। लेकिन पहल अधिक होती है। शिक्षक आगे बढ़ते है और सिस्टम उन्हें प्रोत्साहित करता है। सहयोगात्मक व्यावसायिकता मजबूत व्यक्तियों के समुदायों के बारे में है, जो एक– दूसरे की मदद करने और सीखने के लिये प्रतिबद्ध है।

6. आपसी संवाद – सहयोगात्मक व्यावसायिकता और पेशेवर सहयोग दोनों में शिक्षक की बातचीत शामिल है।

7 .संयुक्त कार्य – संयुक्त काय में क्रियाएं और कभी–कभी उत्पाद या कलाकृतियाँ शामिल होती है जैसे पाठ, पाठ्यक्रम या, रिपोर्ट, को उपकरणों या प्रोटोकॉल द्वारा सुगम बनाया जाता है।

8.छात्रों के साथ सहयोग करना – सहयोगी व्यावसायिकता के सबसे गहरे रूपों में, छात्र अपने शिक्षक के साथ मिलकर बदलाव लाने में सक्रिय रूप से शामिल होते है।

9. सभी के लिये बड़ी सोच – सहयोगात्मक व्यावसयिकता में सभी की बड़ी सोच की तस्वीर मिलती है। वे इसे देखते है, इसे जीते है, और इसे एक साथ बनाते है

निष्कर्ष–

सहयोगात्मक व्यावसायिकता ने शिक्षको के बीच पारस्परिक स्वीकृति, विश्वास और सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा दिया, विविध सोच क्षमताओं का पोषण किया और शिक्षण पेशेवर पुणो को बढ़ावा दिया, अतः गतिशील सीखने का माहौल छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिये अत्यधिक प्रभावी साबित हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

1.हारगिब्स ए एण्ड ओ कोनर, (2018) कोलोबोरेटिव प्रोफेशनलिज्म, पेन टीचिंग टीचर मिनस लर्निंग फॉर ऑल, कोरीवन प्रेस थाउसेंड ओर्क्स सीए.

2.डार्लिंग–हैमंड, एल., हाइलर, एम. ई., और गार्डनर, एम. (2017). इफेक्टिव टीचर प्रोफेशनल डेवलपमेंट लर्निंग पॉलिसी इंस्टीट्यूट. https:@@learningpolicyinstitute-org@sites@default@files@product&files@Effective&Teacher&Professional&Development&REPORT-pdf.

3.विल्सन, एस. एम., और बर्न, जे. (1999). टीचर लर्निंग और प्रोफेशनल नॉलेज का एक्विजिशनरू कंटेंपररी प्रोफेशनल डेवलपमेंट पर रिसर्च की जांच. रिव्यू ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 24(1), 173–209. https://doi-org/10.3102/0091732ग024001173